B.A Part-2 (Psy. HONS.) Paper-3 Topic- Steps of Observation Method . Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology, Vaishali Mahila College, Hajipur)

प्रेक्षण विधि के पद

(Steps)

प्रेक्षण विधि मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण विधि है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याएं ऐसी होती हैं जिसके अध्ययन में प्रायोगिक विधि का उपयोग सर्वथा साध्य नहीं रहता इस कारण विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अध्ययन के लिए प्रदत के संकलन (data collection) में प्रायोगिक पद्धति के अतिरिक्त अन्य उपकरणों का उपयोग करते हैं।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा Data collection करने में observation method का प्रयोग भी काफी अधिक किया जाता है। प्रेक्षण विधि में अध्ययनकर्ता प्राणियों के व्यवहारों को निष्पक्ष भाव से प्रेक्षण या अवलोकन करते हैं। अपने अवलोकन के आधार पर वह एक विशेष रिपोर्ट तैयार करते हैं। जिसका विश्लेषण कर वह उस प्राणी के व्यवहार के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। प्रेक्षण विधि के steps इस प्रकार हैं:-

1. **उपयुक्त योजना-** निरीक्षण विधि से अध्ययन करने से पहले आवश्यक है कि अध्ययन व्यवहार और समस्या के संबंध में उपयुक्त योजना बना ली जाए।

निरीक्षणकर्ता को निरीक्षण करने से पहले यह निश्चित कर लेना चाहिए कि किन लोगों का निरीक्षण करना है, किस प्रकार के व्यवहार का निरीक्षण करना है? निरीक्षण के लिए क्षेत्र, समय, उपकरण आदि के संबंध में पहले से ही योजना बना लेनी चाहिए। पहले से योजना बना लेने से अध्ययन अधिक उद्देश्यपूर्ण हो जाता है, सुनियोजित हो जाता है और इस प्रकार की योजना शुद्ध आंकड़ों के संकलन में सहायक होती हैं।

2. **व्यवहार का निरीक्षण-** निरीक्षण करते समय निरीक्षणकर्ता व्यवहार के उन पक्षों का निरीक्षण अधिक ध्यान से करता है,

जो उसकी अध्ययन समस्या से संबंधित है एवं पूर्व योजनानुसार है। वह निरीक्षणों के साथ-साथ विभिन्न उपकरणों की सहायता से व्यवहार को भी नोट करता जाता है।

3. **व्यवहार को नोट करना-** निरीक्षणकर्ता व्यवहार को नोट करने का कार्य निरीक्षणों को करने के साथ-साथ करता है। व्यवहार को नोट करने के लिए वह उपकरणों का उपयोग करता है; जैसे- मूवी कैमरा के उपयोग से किसी भी प्रकार के व्यवहार के निरीक्षण को सरलता से नोट किया जा सकता है। इसी प्रकार से व्यवहार से संबंधित

संवादों को टेप रिकॉर्डर की सहायता से नोट किया जा सकता है। अध्ययनकर्ता व्यवहार के उन पक्षों को अधिक सावधानी और ध्यान से नोट करता है जो उसकी अध्ययन समस्या से संबंधित है।

4. **विश्लेषण**- समस्या से संबंधित व्यवहारों के निरीक्षणों को नोट करने के बाद अध्ययनकर्ता प्राप्त निरीक्षणों को यदि संभव होता है तो अंकों में बदलता है और प्राप्त अंकों का सारणीयन करता है, और फिर विभिन्न सांख्यिकीय विधियों के आधार पर आंकड़ों का विश्लेषण करता है। यदि निरीक्षित व्यवहार को

अंको में परिवर्तित करना संभव नहीं होता है तो किसी अन्य कसौटी के आधार पर निरीक्षित व्यवहार का विश्लेषण किया जाता है।

5. **व्याख्या और समान्यीकरण-** निरीक्षित व्यवहार का विश्लेषण करने के पश्चात व्यवहार की व्याख्या की जाती है। यदि संभव होता है तो व्यवहार की व्याख्या विभिन्न सिद्धांतों के आधार पर की जाती है अथवा व्यवहार के कारणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन बहुधा प्रतिदर्श (sample) की सहायता से किए जाते हैं अथवा मनुष्य के अतिरिक्त विभिन्न

प्रकार के पशुओं पर भी किए जाते हैं। जब अध्ययन पशुओं पर किए जाते हैं अथवा पशुओं का प्रतिदर्श लेकर अथवा मनुष्यों का प्रतिदर्श लेकर अध्ययन किया जाता है तो इस अवस्था में प्राप्त परिणामों का सामान्यीकरण की आवश्यकता होती है। सामान्यीकरण में देखा जाता है कि sample से प्राप्त परिणाम कहां तक सामान्य जनसंख्या पर लागू होते हैं।